

अंदबिश्वास



Bangani

अंदबिश्वास

Bangani
uttarkashi, uttrakhand, india

For permission to reuse, contact the copyright holder.

Big book in Bangani language
Community based Book

परकाशण:-
NLCI
बंगाणी मसी समिति समू

दो बात

यह किताब बंगाणी भाषा में बनायी गयी है। इस किताब में एक कहानी है जिसे 10-12 पेजों में बनाया गया है और हर पेज में लगभग 2-3 वाक्य है। इस किताब में हर एक वाक्य के अनुसार चित्र भी डाला गया है। इन चित्रों के आधार से पढ़ने वाला कहानी बता सकता है और पढ़ाने वाला कहानी सुना सकता है। इस पुस्तक का उपयोग साक्षरता कार्यक्रम में किया जाता है। यह किताब बड़े ही आसान और बहुत ही कम शब्दों में और बहुत सरल रीति से बनायी गयी है। ताकी जो लोग पढ़ने की शुरूआती स्तर में हैं वह आसानी से इस कहानी को अपनी अपनी मातृ-भाषा में पढ़के आसानी से समझ सकें और अपनी मातृ-भाषा में पढ़ने और लिखने का प्रयास कर सकें।

॥धन्यवाद॥



एक गाउँ दि रौतनू नौऊँ रौ एक
माणूछ आपडै पौरिबार रै साथै
रौयै थौ । सेउ मैनती किसान थौ ।
पर अंदबिश्वास दि बौरी बिश्वास
कौरै थौ ।



एक दूस रौतनू रौ बेटा अनूइ बौरी
तेज़ बुखार आयै। तिउं सेउ डौक्टर
काइ ना गिणनै रै बौदलै सेउ तंत्र मंत्र
कौरणै वाळै काइ गिणौ।



तंत्र मंत्र कौरणै वाळ्हेइ बोलौ कि
एसदि बुरी आत्मा रौ ज़पट रौ पौड़ी
एज़ि बौज़ै कौइ तु एस माइं एक
बौड़ी पुज़ा कौराउँ औज़ि साथी एक
बौळि बी जा चौड़ाणै।



रौतनुइ तंत्र मंत्र कौरणै वाळे रि
बुशौउं दि बिश्वास कियौ। सेउ पुज़ा
औज़ि बौळि रौ इंतज़ाम लागौ
कौरदै। पर अनु री तौबियेत औज़ि
बी ज़ादा खौराब औन्दि लागी।



सुनिता गाउँ री एक पौड़ी लिखी
छेउड़ थी। तियै रौतनु सौमज़ाओ
कि अजुइ सौकाळी डौक्टर काइ
गिणौ, केलाकि एसरी तौबियेत
ज़ादाइ खौराब रौइ औइ पर रौतनुइ
तिंरी बुशै अनशुणी कौरी।



अनु री तौबियेत ज़ादा खौराब औणे
री बौज़ै कौड़ तेसरी मौत उई, रौतनु
बौरी दुखी उवौ तिणी सेउ आपड़ी
किस्मत मानी गोड़ थी।



कुछ मीनै बासियै गाउँ दि एक
स्वास्थ्य शिविर रौ आयोजन कियौ ।
डौक्टरुं अलग अलग बिमारिउँ रै
बारेदि ज्ञानकारी देणी । औज़ि बोलौ
कि बौक्तेदि ईलाज़ कौराइयौ ज्ञानेइ
बौचाइ सौकैण ।



रौतनु बी स्वास्थ्य शिविर दि
आओन्दौ थौ। तिणी डौक्टर आरी
आपड़ै बेटा री बीमारी रै बारे दि
बोलौ। डौक्टरेड बोलौ कि अनु री
ज्ञान बौचि सौकै थी। जौ तेसरौ
ईलाज़ बौक्तेदि औयै थौ।



एशौ शुणियो रौतनु कै आपड़ी
गौलती रौ ऐसास उवौ। तैबै सेउ
सौमजौ कि अंदबिश्वास री बौजै
कौइ आउं आपड़ै बेटा कौइ
दुरै उवौ।



तैबै रौतनुइ एशौ बिचार कियौ कि
आउँ गाउँ दि अंदबिश्वास रै खिलाफ
जागरूकता फैलाउ । तिणी सुनीता
औज़ि दुजै पौड़ै लिखै लोगु रै साथै
मिलियौ एक सौमिति चाणी ।



तिउँरी समिति वाळौउँ गाउँ दि
स्वास्थ्य औज़ि पौड़नै लिखणै रै
बारेदि एक शिविर रौ आयोजन
कियौ। गाउँ रै लोगु आराम आराम
कौइ तंत्र मंत्र कौरणै वाळेदि बिश्वास
कौरणौ पोरु छोड़ौ।



रौतनु री बौजै कौइ पुरै गाउँ दि
परिवर्तन औन्दै लागौ। ऐबै लोग
आपड़ी बिमारिउँ रौ ईलाज कौरान्दै
डौक्टर काइ डेन्दै लागै। औजि
अंदबिश्वास कौइ दुरै औन्दै लागै।

For the Teacher

This Big Book is designed to be used for two weeks. It promotes enjoyment of storybooks, development of vocabulary, the skills of prediction, sequencing and main idea, and the understanding that books are made up of words.

On **Monday**, the teacher

- shows everyone the cover of the book
- reads the title, while moving a finger under it
- turns to the first page, and discusses the picture (asks the children to predict what will happen)
- reads the text on the first page, fluently (not slowly), and
- asks the children what they think they will see on each page. (The teacher is the only one “reading.”)

On **Tuesday**, the teacher

- shows everyone the book, and
- reads the story again, following the words with a finger, without as much discussion of the pictures.

On **Wednesday**, the teacher

- invites children to join in with “reading” when the story comes to parts which are familiar to them
- shows a flashcard from the story and tells the class what the card says, and
- invites children to find the same word in the storybook (or to match the card with the word in the book to see if it is the same)

On **Thursday**, the teacher

- points smoothly to the words in the story and lets some volunteers “read” a page, if they can remember the story by now, and
- lets the children match the flashcards to the words in the story.

On **Friday**, the children

- act out (dramatize) the story as others help the teacher “read” it.

यह किताब NLCI के द्वारा तैयार की गई है।

हम मात्रभाषा में साक्षरता कार्यक्रम करते हैं। जिसके अन्तर्गत हम अपने क्षेत्र में अलग अलग भागों में शिक्षा देते हैं। जिसमें हमारा उद्देश्य यह है कि, हमारे क्षेत्र के असाक्षर लोग और बच्चे साक्षर हो सकें।

और पढ़ लिख कर अपने समाज का विकास कर सकें।

हम जानते हैं कि हमारे क्षेत्र के अधिकतम लोग बोल-चाल में हो या काम-काज में हर स्थान पर अपनी मात्रभाषा का उपयोग करते हैं। इसलिए हम अपने क्षेत्र के लोगों के लिए जो भी पाठ्य सामग्री तैयार करते हैं। उसे उन्हीं की मात्रभाषा में तैयार करते हैं। जिससे उन्हें पढ़ने और लिखने में आसानी हो और वो जल्दी ही पढ़ना और लिखना सीख सकें।

हम अपनी संस्था में साक्षरता के द्वारा मात्रभाषा में वयस्क शिक्षक ही नहीं चलाते बल्कि, अपने क्षेत्र में पढ़े-लिखे लोगों के लिये तथा बच्चों के लिये भी अलग-अलग तरह की पाठ्य सामग्री भी उन्हीं की मात्रभाषा में उपलब्ध कराते हैं। जिससे की बच्चे अपने बचपन से ही अपनी मात्रभाषा को महत्व दें जिससे हमारी भाषा लुप्त ना हो। हम प्रार्थना करते हैं कि हमारे क्षेत्र के सभी लोग पढ़ लिख सकें और हमारे क्षेत्र का और अधिक विकास हो सकें।

.....,धन्यवाद,.....

